कलीसिया अध्याय 31

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने से सम्बन्धित इस पाठ्यक्रम को प्रार्थना के साथ परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **लूका 22-24**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** **(*या* अपने नोट्स को *पढ़ें*)** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (लूका 22-24) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[यूहन्ना में मुख्य वचन]* **(11) नीतिवचन 11:25**

दो दो करके *पुनरावलोकन* करें।
(2) विश्वासयोग्य बने रहें। नीतिवचन 3:3-4 । कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएं; वरन उन को अपने गले का हारा बनाना, और अपनी हृदय रूपी पटिया पर लिखना। और तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा, तू अति बुद्धिमान होगा।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *[कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई]* **मसीहियों और कलीसियाओं में बढ़ोतरी**

परिचय। यह शिक्षा मसीह के अनुयायियों की बढ़ोतरी के बारे में और मसीही समाज(मण्डली या घरेलू संगति) की बढ़ोतरी के बारे में है। हम बाइबल में बढ़ोतरी के सिद्धान्तों को देखेगें। और हम बाइबल से मसीही विश्वासियों, मसीही शिष्यों और मसीही कार्यकर्ताओं और मसीही कलीसियाओं (घरेलू कलीसियाओं,घरेलू संगति) की बढ़ोतरी के बारे में सीखेगें।

क. बाइबल में आत्मिक बढ़ोतरी का सिद्धान्त

परिचय दें। लोगों को बढ़ाने के लिए, पहले आपको उन्हें जीतने की आवश्यकता है।

शिष्यों को बढ़ाने के लिए, आपको शिष्य बनाने की आवश्यकता होगी।

1. पुराने नियम की सेवकाई बढ़ोतरी की सेवकाई थी।

परिचय दें। आत्मिक बढ़ोतरी का अर्थ है यीशु मसीह में उन विश्वासियों की संख्या में वृद्धि करना जो बाइबल के परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं और उसकी बातों को मानते हैं।

खोजें और चर्चा करें। पुराने नियम में आत्मिक बढ़ोतरी कैसे हुई?

पढ़िये भजन 78:3-7; योएल 1:3

ध्यान दें। पुराने नियम में आत्मिक बढ़ोतरी को परमेश्वर के ज्ञान और उसकी इच्छा में अगली तीन पीढ़ियों तक ले जाना शामिल था! पुराने नियम में जब परमेश्वर ने इस्राएलियों को अपने लोगों के रूप में बुलाया, तो उसने उन्हें आत्मिक रूप से बढ़ने की आज्ञा दी।

(1) भजन 78:3-7।

इस भजन में यह बताया गया है कि कैसे इस्राएलियों ने जो कुछ उनके पूर्वजों ने उन्हें परमेश्वर और उसकी इच्छा के बारे में बताया था, उसे अपनी अगली तीन पीढ़ियों तक पहुँचाया। हमने पढ़ा, "परमेश्वर ने इस्राएल में व्यवस्था चलाई, जिसके विषय में उसने हमारे पितरों को आज्ञा दी (पहली पीढ़ी), कि वह अपने-अपने बालबच्चों को इसके विषय में सिखाएँ (दूसरी पीढ़ी), कि आनेवाली पीढ़ी (तीसरी पीढ़ी) भी उन्हें जान सकें और वे बदले में इन्हें अपने-अपने बाल-बच्चों (चौथी पीढ़ी) को बताएँ। जिससे वे परमेश्वर पर भरोसा रखें और ईश्वर के कामों को न भूलें परन्तु उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहें"। परमेश्वर ने पूर्वजों को अपनी समझ और उसके अद्‌भुत कामों और आज्ञाओं को उनकी अगली तीन पीढ़ियों, यानी उनके अपने बच्चों, उनके बच्चों के बच्चों और उनके पोतों को देने की जिम्मेदारी दी! इस प्रकार इस्राएल में लोगों की हर पीढ़ी को परमेश्वर और उसके अद्‌भुत कामों को जानने और उसकी आज्ञाओं का पालन करने का अवसर मिला।

(2) योएल 1:3।

परमेश्वर ने योएल (पहली पीढ़ी) को आज्ञा दी, "अपने बाल-बच्चों से (दूसरी पीढ़ी) इसका वर्णन करो, और वे अपने बाल-बच्चों से (तीसरी पीढ़ी), और वह अपनी आनेवाली पीढ़ी से (चौथी पीढ़ी) इसका वर्णन करें"। इस्राएल में हर पीढ़ी की यह ज़िम्मेदारी और कर्तव्य था कि वे परमेश्वर के ज्ञान और उसकी इच्छा को आनेवाली अगली तीन पीढ़ियों तक पहुँचायें। ऐसा तब हुआ जब पूर्वजों, पितरों, पिताओं और भविष्यद्वक्ताओं ने दूसरों तक परमेश्वर की बातों को पहुँचाया। हर पीढ़ी के प्रत्येक बच्चे (व्यवस्थाविवरण 6:1-9) और अन्य लोगों के बच्चे अपने होते हैं (भजन 78:71-72)।

1. यीशु मसीह की सेवकाई एक वृद्धि (बढ़ोतरी) की सेवकाई थी।

(1) यीशु और सुसमाचार।

खोजें और चर्चा करें। यीशु मसीह ने अपने लिए लोगों को कैसे जीता?

ध्यान दें। यीशु मसीह ने अपने लिए लोगों को जीता। उसने करीब दिसम्बर 26 ईसवीं में अपनी सेवकाई की शुरूआत की। उसने लोगों को या तो उन्हें अपने जीवन में शामिल करके या ("आओ और दखो") या स्वयं को उनके जीवन में शामिल करके (काना का विवाह) जीता।

- ***पढ़ें*** मरकुस 1:15; यूहन्ना 1:39-43 - यीशु ने अपने जीवन और अपनी सेवकाई में लोगों को शामिल

किया। वह गलील में गया और लोगों को परमेश्वर का सुसमाचार सुनाया, "परमेश्वर का राज्य निकट है। पश्चाताप करो और सुसमाचार पर विश्वास करो"। उसने लोगों को सुसमाचार का प्रचार करके और उन्हें "पश्चाताप करने या बदलने और सुसमाचार पर विश्वास करने" के लिए चुनौती देकर अपने जीवन में शामिल किया! उसने लोगों को आमंत्रित किया : "आकर देखो" (मैं कैसे रहता हूँ) और "मेरे पीछे हो लो" (मैं इस संसार में क्या कर रहा हूँ)।

- ***पढ़ें*** यूहन्ना 2:1-2 - यीशु ने स्वयं को आमतौर पर अन्य लोगों के जीवन में शामिल किया। उदाहरणस्वरूप, वह विवाह समारोह में गया, यरूशलेम में होने वाले यहूदी पर्वों और सभास्थलों में महासभा के लिए गया। वह लोगों के घरों में गया और उनके साथ खाना खाया। उन्होंने सड़क पर आम लोगों से बात की और लोगों से मछली पकड़ने या कर देने जैसी सामान्य दैनिक परिस्थितियों में भी लोगों से बात की। इस अवधि के दौरान, उसके चेले अकसर उसकी शिक्षा को सुनते थे, लेकिन उन्होंने फिर भी मछुआरों, चुंगी लेनेवालों और अन्य कार्यों के रूप में अपने दैनिक कार्य को बनाए रखा।

(2) यीशु और शिक्षा।

खोजें और चर्चा करें। *यीशु ने अपने चेलों को कैसे प्रशिक्षित किया?*

ध्यान दें। यीशु मसीह ने अपने चेलों को मसीही विश्वास में स्थापित करके और उन्हें एक कार्य के लिए तैयार करके प्रशिक्षित किया। लगभग एक वर्ष बाद, यीशु ने बारह पुरुषों को इसलिए बुलाया ताकि वह उन्हें तैयार करे और वे पूर्णकालिक उसका अनुसरण करें।

- ***पढ़ें*** मत्ती 4:19। उसने अपने कुछ चेलों से कहा, "आओ, मेरे पीछे चले आओ तो मैं तुम्हे मनुष्यों के पकड़नेवाला बनाऊँगा"।
- ***पढ़ें*** लूका 6:12-13; मरकुस 3:13-14 - उसने प्रार्थना के साथ बारह लोगों को चुना जिन्हें उसने अपने चेलों के रूप में प्रशिक्षित किया। उसने उन्हें "अपने साथ" रखने के लिए प्रशिक्षित किया ताकि वे उसके जीवन और सेवकाई को देखें, उसकी शिक्षाओं और जवाबों को सुनें, और अनुभव करें कि किस प्रकार लोग परिवर्तित होते हैं और उनकी सहायता की जाती है। वे यीशु के साथ रहने के द्वारा गहराई से प्रभावित थे!
- ***पढ़ें*** लूका 10:1-16। उसने उन्हें परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार का प्रचार करने, लोगों को सिखाने, ज़रूरतमंदों की सहायता करने और बीमारों को चंगा करने के लिए दो-दो करके भेजने के लिए तैयार किया। उस समय के बाद से उसके चेले पूर्णरूप से उसके पीछे हो लिए।
- ***पढ़ें*** यूहन्ना 11:54। अपनी सेवकाई के आखिर के दो वर्षों के दौरान, यीशु ने अपने चेलों के साथ भविष्य में की जाने वाली सेवकाई को सिखाने और प्रशिक्षित करने के लिए अकेले बहुत समय बिताया।

(3) यीशु और भेजना।

खोजें और चर्चा करें। यीशु मसीह ने अपने चेलों को किस उद्देश्य के लिए प्रशिक्षित किया?

ध्यान दें। यीशु मसीह ने चेलों को पूरी दुनिया में सेवकों या सुसमाचारकों (मिशनरियों) के रूप में भेजा।

- ***पढ़ें*** मत्ती 24:14। क्रूस पर अपनी मृत्यु से ठीक पहले। यीशु ने कहा कि परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार दुनिया की सभी जातियों के लिए किया जाएगा।
- ***पढ़ें*** मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15; लूका 24:44-49; यूहन्ना 20:21; प्रेरितों 1:8 - साढ़े तीन साल के शिक्षण और प्रशिक्षण (कार्य), और लोगों को प्रचार, शिक्षण और चंगाई में अपने चेलों के लिए एक उदाहरण स्थापित करने के बाद, यीशु मसीह क्रूस पर मर गया और फिर से जी उठा।

- अपने पुनरुत्थान के बाद उसने अपने चेलों को **महान आज्ञा** दी। सभी चार सुसमाचार महान आज्ञा के विषय में बताते हैं और दिखाते हैं कि यीशु ने कई बार अलग-अलग जगहों में अपने चेलों के सामने इस महान आज्ञा को दोहराया। मत्ती 28:18-20 में उसने आज्ञा दी, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सभी जातियों के लोगों को चेला बनाओ, उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हे आज्ञा दी हैं, मानना सिखाओ और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूँ"।
- ***पढ़ें*** प्रेरितों 17:6-7 - चेलों का यह छोटा समूह प्रत्येक स्थान पर गया और सचमुच इस समूह ने रोमन साम्राज्य को पलट कर रख दिया!

2. नए नियम की सेवकाई बढ़ोतरी की सेवकाई थी।

खोजें और चर्चा करें। नए नियम में आत्मिक बढ़ोतरी किस प्रकार हुई?

(1) यीशु ने मसीहियों, चेलों और सेवकों की *बढ़ो*तरी की।

पढ़ें मत्ती 28:19-20 - यीशु मसीह ने नए नियम में अपने चेलों और उनकी पीढ़ियों को आत्मिक बढ़ोतरी के विषय में शिक्षा दी! यीशु ने अपने चेलों को यह आज्ञा दी कि वे नए चेले बनाएँ और इन नए चेलों को महान आज्ञा सहित सभी आज्ञाओं का पालन करना सीखाएँ! चेलों की प्रत्येक नयी पीढ़ी को चेले बनाने थे और महान आज्ञा सहित यीशु मसीह की सभी आज्ञाओं को मानना सिखाना था! इस प्रकार, नए विश्वासियों, चेलों और चेले बनानेवालों की पीढ़ी कभी समाप्त नहीं हुई!

(2) पतरस ने परिवर्तित मसीहियों, मसीही चेलों, मसीही सेवकों और मसीही कलीसिया की *बढ़ो*तरी की।

पढ़ें प्रेरितों 4:13 - पतरस यीशु मसीह के चेलों में से एक था। पतरस ने कई बार लोगों को सुसमाचार का प्रचार किया और नए अनुयायियों को यीशु मसीह का चेला बनना सिखाया। शुरुआत में, उसने मुख्य रूप से यरूशलेम में काम किया, लेकिन बाद में उसने यात्रा की, नई कलीसियाओं की स्थापना की, कलीसियाओं का दौरा किया और उन्हें पत्र लिखे। उसकी सेवकाई निम्न लोगों के लिए थी:

- बड़े समूह (हजारों का)
- छोटे समूह (यरूशलेम में प्रेरितों के समूह)
- व्यक्तिगत (बरनबास और मरकुस)

(3) बरनबास ने परिवर्तित मसीहियों, मसीह के चेलों, मसीही सेवकों और मसीही कलीसिया की बढ़ोतरी की।

पढ़ें प्रेरितों के काम 11:19-26 - बरनबास पतरस की सेवकाई के दौरान मसीह का अनुयायी बन गया। उसने कई लोगों को सुसमाचार का प्रचार किया और नए अनुयायियों को यीशु मसीह का चेला बनना सिखाया। उसने सीरिया के अन्ताकिया की यात्रा की और वहाँ की नयी कलीसिया को बढ़ने में सहायता की। इसके अलावा उसकी सेवकाई में बड़े, छोटे और व्यक्तिगत समूह (पौलुस) शामिल थे।

(4) पौलुस ने परिवर्तित मसीहियों, मसीह के चेलों, मसीही सेवकों और मसीही कलीसिया की बढ़ोतरी की।

पढ़ें 1 थिस्सलुनिकियों 1:5-8; 2 तीमुथियुस 3:10-14 बरनबास पौलुस को तुर्की के तरसुस में लाया और सीरिया के अन्ताकिया में उसे अपनी सेवकाई में शामिल किया। पौलुस ने कई लोगों को सुसमाचार का

प्रचार किया और नए अनुयायियों को यीशु मसीह का चेला बनना सिखाया। उसने बहुत यात्रा की, कम से कम चार मिशनरी यात्राएँ की तथा एशिया और यूरोप में नयी कलीसियाओं की स्थापना की। उसने मसीही कलीसियाओं का दौरा किया, नए मसीही सेवकों को प्रशिक्षित किया, उन्हें चेला बनाने के लिए भेजा और कलीसियाओं को पत्र लिखे।

1 थिस्सलुनिकियों 1:5-8 में वह वर्णन करता है कि थिस्सलुनिके नामक एक शहर में आत्मिक बढ़ोतरी कैसे हुई। पौलुस ने अपने सहकर्मी, सीलास और तीमुथियुस के साथ मिलकर थिस्सलुनिके में सुसमाचार का प्रचार किया। वे उस समय उनके लिए उदाहरण बन गए जब लोगों ने यह सुना कि उन्होंने सुसमाचार को किस प्रकार सामर्थ्य और दृढ़ता के द्वारा प्रचार किया और यह भी देखा कि वे उन लोगों के बीच मसीहियों के रूप में किस प्रकार रहते थे। इसलिए जब उन मसीहियों को अपने साथी-नागरिकों के विरोध के बीच वचन प्राप्त हुआ, तब वे थिस्सलुनिके में पौलुस, सीलास और तीमुथियुस के चेले (अनुयायी) बन गए। फिर वे बदले में मकिदुनिया और यूनान में विश्वासियों के लिए उदाहरण (नमूना) बन गए। उनके विश्वास को हर जगह पहचाना गया।

(5) तीमुथियुस ने परिवर्तित मसीहियों, मसीह के चेलों, मसीही सेवकों और मसीही कलीसिया की बढ़ोतरी की।

पढ़ें 2 तीमुथियुस 2:2 - शुरुआत में, तीमुथियुस ने अपनी नानी और माँ से बहुत कुछ सीखा (2 तीमुथियुस 1:5; 3:15)। बाद में, उसने प्रेरित पौलुस से सबसे अधिक सीखा क्योंकि वह उसका अनुयायी था और लगभग 14 वर्षों तक उसने उसके साथ काम किया था। तीमुथियुस ने सुसमाचार का प्रचार किया और नए अनुयायियों को यीशु मसीह का चेला बनना सिखाया।

अपने जीवन के अन्त में पौलुस ने तीमुथियुस को स्वयं को आत्मिक तौर पर बढ़ाने की आज्ञा दी। "जो बातें तू ने बहुत गवाहों के सामने मुझसे सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे, जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों"। प्रेरित पौलुस कहता है कि तीमुथियुस इस बात के लिए ज़िम्मेदार है कि सुसमाचार का ज्ञान अगली पीढ़ी तक पहुँचाया जाए! तीमुथियुस को इसे विश्वासी (भरोसेमन्द) पुरुषों को सौंपना पड़ा जो अगली पीढ़ी को सीखाने के योग्य थे!

ध्यान दें कि आत्मिक बढ़ोतरी किस प्रकार होती है : यीशु ने पतरस को शामिल किया। पतरस ने बरनबास को शामिल किया। बरनबास ने पौलुस को शामिल किया। पौलुस (पहली पीढ़ी) ने इसे अगली तीन पीढ़ियों तक पहुँचाया : उसने तीमुथियुस (दूसरी पीढ़ी) को शामिल किया। तीमुथियुस ने इसे विश्वसनीय और सक्षम पुरुषों (तीसरी पीढ़ी) तक पहुँचाया। उन्होंने इसे "अन्य" लोगों (चौथी पीढ़ी) तक पहुँचाया।

इस तरह सुसमाचार हमारे पास आया! अब भरोसेमंद (विश्वासयोग्य) और सक्षम लोगों की अगली तीन पीढ़ियों को सामर्थ्य और दृढ़ विश्वास के साथ सुसमाचार बताने की हमारी बारी है!

3. किस प्रकार के लोगों की बढ़ोतरी होनी चाहिए।

सिखाएँ। मसीहियों की बढ़ोतरी की सेवकाई में किस प्रकार के लोगों को बढ़ाना चाहिए?

- मत्ती 28 सिखाता है कि मसीहियों को यीशु मसीह के चेलों की बढ़ोतरी करनी चाहिए। चेले आसानी से परिवर्तित हुए लोग नहीं होते हैं, लेकिन परिपक्व, कामकाजी और दृढ़ मसीही होते हैं। वे मसीह के साथ चलते हैं और बाइबल की आज्ञाओं और शिक्षाओं का पालन करते हैं।
- 2 तीमुथियुस 2 सिखाता है कि मसीहियों को विश्वासयोग्य (भरोसेमंद) मसीहियों की बढ़ोतरी करनी

चाहिए जो दूसरों को सिखाने में योग्य या सक्षम भी हों।

- भजन 78 सिखाता है कि मसीहियों को स्वयं की पीढ़ी से ही नए विश्वासियों की बढ़ोतरी करनी चाहिए।
- 1 थिस्सलुनिकियों बताता है कि मसीही अपने स्वयं के प्रान्त और यहाँ तक कि अपने पड़ोसी प्रान्तों में भी चेलों की बढ़ोतरी करते हैं।
- मत्ती 24,28 और प्रेरितों के काम 1:8 सिखाते हैं कि मसीहियों को हर देश में और पूरी दुनिया में लोगों के हर समूह में चेलों की बढ़ोतरी करनी चाहिए : उदाहरण के लिए, टैक्सी ड्राइवर, हेयरड्रेसर, व्यवसायी श्रमिक, छात्र, शरण तलाशने वाले इत्यादि। (Greek: ethné) (तुलना करें प्रकाशितवाक्य 5:9)।

ख. मसीही कलीसियाओं (मण्डलियों) की बढ़ोतरी

परिचय दें। आत्मिक बढ़ोतरी का अर्थ है प्रत्येक स्थान में मसीही कलीसियाओं (मण्डलियों या घर की सभाओं) की संख्या में वृद्धि।

खोजें और चर्चा करें। नयी मसीही कलीसिया (मण्डलियों या घर-घर सहभागिता) किस प्रकार स्थापित होती हैं?

ध्यान दें:

1. परमेश्वर एक नयी मसीही कलीसिया स्थापित करने के लिए पहल करता है।

पढ़ें। प्रेरितों के काम 13:1-4 - पवित्र आत्मा एक विशेष कार्य के लिए एक स्थानीय मसीही कलीसिया में कुछ लोगों को अलग कर सकता है। इस प्रकार उसने पौलुस और बरनबास को अन्य शहरों, प्रान्तों और देशों को सुसमाचार सुनाने के लिए बुलाया। उसने स्थानीय कलीसिया को इन सेवकों को मुक्त करने की भी आज्ञा दी (अन्य सभी कर्तव्यों और कार्यों से)।

2. मसीही सेवक परिवर्तित लोगों पर विजय प्राप्त करते हैं और चेले बनाते हैं।

पढ़ें प्रेरितों के काम 13:5,13-52; प्रेरितों के काम 14:1-22 - पौलुस और बरनबास ने परमेश्वर के वचन का प्रचार किया। उन्होंने यीशु मसीह और उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान का प्रचार किया। उन्होंने यीशु मसीह के माध्यम से पापों की क्षमा का प्रचार किया, यानी, लोगों का न्याय व्यवस्था के पालन के द्वारा नहीं बल्कि यीशु में विश्वास रखने से होता है। जब उन्हें सताया जाता था, वे दूसरे शहरों में चले गए और उन्होंने वहाँ सुसमाचार का प्रचार करना जारी रखा। उन्होंने लोगों को व्यर्थ की मूर्तिपूजा को छोड़कर जीवित परमेश्वर की ओर फिरने को कहा। और उन्होंने कई शहरों में बड़ी संख्या में चेलों को जीता। प्रेरितों के काम 14:21 में, हम पढ़ते हैं कि कुछ समय के बाद, मसीह के इन नए अनुयायियों को बढ़ने का अवसर मिला, वे उन्हें दृढ़ और प्रोत्साहित करने के लिए इन मसीही चेलों के समूहों के पास लौट आए।

3. मसीही सेवक प्रत्येक स्थानीय मसीही कलीसिया (मण्डली) में प्राचीनों की नियुक्ति करते हैं।

पढ़ें प्रेरितों के काम 14:23

(1) नई मण्डलियों की नींव रखने वाले।

पौलुस और बरनबास, जिन्होंने मसीहियों के इन नए समूहों को सुसमाचार सुनाया और चेले बनाये, प्रत्येक स्थानीय मसीही कलीसिया में उनके लिए प्राचीनों को नियुक्त या स्थापित किया और फिर उन्हें प्रभु यीशु मसीह के हाथों में और सुरक्षा में प्रार्थना के साथ सौंप दिया। "नियुक्त" और "स्थापित" शब्द का अर्थ "लोकतांत्रिक मतदान के माध्यम से चुनने" या "अन्य पासबान या बिशपों के माध्यम से उन्हें व्यवस्थित करने से नहीं है"। तब से, इन प्राचीनों या इन प्राचीनों के समूह (Greek: presbuterion) (1 तीमुथियुस 4:14) का उत्तरदायित्व स्थानीय मसीही कलीसिया का नेतृत्व करना था। इनमें से अधिकतर स्थानीय मसीही कलीसियाएँ घरों में मिला करती थीं और यह वास्तव में घर की सभा या कलसिया थीं (रोमियों 16:5)!

(2) नयी कलीसिया के प्राचीन।

प्राचीन (Greek: presbuteros, बहुवचन) समुदाय के भीतर शायद सबसे आत्मिक परिपक्व चेले और सक्षम पुरुष थे। यद्यपि उन्हें स्थानीय मसीही कलीसिया में अगुवाई की सेवकाई के लिए नियुक्त किया गया था, लेकिन वे आमतौर पर पूर्णकालिक नहीं थे और उन्हें इसके लिए कोई राशि भी नहीं मिला करती थी (तुलना करें 1 तीमुथियुस 5:17)।

(3) प्राचीनों के कार्य।

प्राचीनों के कार्य थे :

- कलीसिया में लोगों का चरवाहा (पासबान) और पर्यवेक्षक या रखवाला बनना
- कलीसिया की गतिविधियों और सम्पत्ति का भण्डारी (प्रबन्धक) और अधिकारी बनना
- कलीसिया में परमेश्वर के वचन का शिक्षक बनना
- और यह सब सेवक के रूप में है न कि लोगों पर अधिकार जमाने वाला

प्राचीन सीधे प्रभु यीशु मसीह के प्रति उत्तरदायी और लेखा देनेवाले थे (इब्रानियों 13:17), जो हर स्थानीय मसीही कलीसिया के प्रमुख और विश्वव्यापी मसीही कलीसिया के प्रमुख थे (प्रेरितों के काम 20:17-35; इफिसियों 1:22; 1 पतरस 5:1-4)।

आपके "अगुवे" कौन हैं? इब्रानियों 13:7 कहता है कि आपके अगुवे वे लोग (बहुवचन) हैं :

- जो आपको परमेश्वर का वचन सुनाते हैं
- जो अपने व्यक्तिगत जीवन में परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं (जो इसे जीते हैं)
- जो विश्वास का एक उदाहरण हों जिसका अनुसरण किया जा सकें

4. मसीही सेवकों का नयी मसीही कलीसिया में प्रभाव होता है।

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 4:14-16; 1 तीमुथियुस 5:17।

पौलुस ने स्वयं द्वारा स्थापित की गयी कलीसियाओं का दौरा करना जारी रखा। उसने अपने कुछ सहकर्मियों को इन कलीसियाओं का दौरा करने के लिए भेजा, ताकि वे उन्हें प्रोत्साहित करें और उनकी सेवा करें, न की उन पर अधिकार जताएँ। उसने उन कलीसियाओं को पत्र लिखें जो आज बाइबल में पाई जाती हैं। लेकिन पौलुस ने इन सभी कलीसियाओं को एक संप्रदाय (संगठन) में एकजुट करने का प्रयास नहीं किया। उसने ऐसे संगठन (एक परिषद या धर्मसभा के रूप में) का भी निर्माण नहीं किया जिनकी छत्र-छाया में वे हर समय रहें! उसने कलीसिया के संगठन में हस्तक्षेप नहीं किया, सिवाय इसके

कि उसने उन्हें स्पष्टरूप से यह सिखाया कि प्राचीनों की आवश्यक योग्यताएँ और उनके क्या कार्य होने चाहिए। 1 तीमुथियुस 4:14 और 5:17 सिखाता है कि स्थानीय प्राचीनों ने (समूह या परिषद के रूप में) कलीसिया का नेतृत्व किया।

5. मसीही सेवक अपने काम का लेखा देते हैं।

पढ़ें प्रेरितों 14:27 - जब पौलुस और बरनबास ने अपना कार्य पूरा कर लिया, तो उन्होंने अपनी स्थानीय मसीही कलीसिया को एक साथ इकट्ठा किया और उन सभी बातों का लेखा दिया जो परमेश्वर ने उनके द्वारा किए थे। ध्यान दें कि उन्होंने केवल यह नहीं बताया कि उन्होंने क्या किया है, लेकिन उन्होंने यह बताया कि परमेश्वर ने अपने अनुग्रह और सामर्थ्य में होकर उनके द्वारा क्या किया। उन्होंने अपने कार्यों की सारी महिमा केवल परमेश्वर को दी!

ग. मसीहियों (मसीह का अनुसरण करने वालों) की बढ़ोतरी

परिचय दें। आत्मिक बढ़ोतरी का अर्थ है हर जगह मसीह के चेलों और मसीही सेवकों की संख्या में वृद्धि। मत्ती 9:35-38 में यीशु कहता है कि पके खेत तो बहुत हैं, लेकिन मजदूर थोड़े हैं! यीशु मसीह के अनुसार, उसके खेतों में मसीही मजदूरों की बढ़ोतरी होनी चाहिए! उनकी बढ़ोतरी कैसे होनी चाहिए?

- मत्ती 9 के अनुसार, परमेश्वर प्रार्थना के द्वारा मसीही सेवकों की बढ़ोतरी करता है!
- मत्ती 10 के अनुसार, परमेश्वर प्रशिक्षण के द्वारा मसीहियों की बढ़ोतरी करता है!
- और दुनिया में मसीहियों को भेजने के द्वारा!

1. मसीह में नए विश्वासियों की बढ़ोतरी (सुसमाचार के माध्यम से)।

पढ़ें यूहन्ना 4:35-38

खोजें और चर्चा करें। मसीह में नए विश्वासियों (परिवर्तित लोगों) की बढ़ोतरी कैसे होती है?

ध्यान दें।

मसीह में नए विश्वासियों (परिवर्तित लोगों) की बढ़ोतरी *सुसमाचार प्रचार* के माध्यम से होती है।

यीशु सिखाता है कि सुसमाचार प्रचार में विभिन्न प्रकार के मसीही सेवकों की आवश्यकता होती है। वह कहता है, "बोनेवाला और है, और काटनेवाला और"। कभी-कभी सुसमाचार प्रचार के कार्य में बहुत बोने की और कभी-कभी काटने की आवश्यकता होती है।

(1) बोनेवाले।

निश्चितरूप से मार्ग में बोनेवाले यीशु और सामरी स्त्री थे। यीशु ने सामरी स्त्री की आत्मा को जीता। इसके बदले में वह अपने शहर में रहने वाले लोगों की आत्मा जीतने निकल गई।

इसी दौरान, यीशु ने अपने चेलों से बात की और कहा, "क्या तुम नहीं कहते कि कटनी होने में अभी भी चार महीने पड़े हैं?" इस क्षेत्र में अनाज की फसल सामान्य तौर पर अप्रैल में हुई थी। इसलिए, जिस समय यीशु ने सामरी स्त्री से मुलाकात की थी वह दिसम्बर का महीना था। दिसम्बर के महीने में अनाज फसल काटने के लिए अभी तक पका नहीं था। लेकिन यीशु मसीह में विश्वास करने वाले लोगों की आत्मिक फसल का कोई विशिष्ट मौसम नहीं होता है! इस मामले में, सामरियों के बीच सुसमाचार

के बीज को बोना और अनन्त जीवन के लिए नए विश्वासियों की फसल काटने के बीच शायद ही अभी कोई समय बाकी था! यीशु ने अनाज के खेतों में से शहर से आने वाले सामरियों के जुलूस को अच्छी तरह से देखा और कहा, "मैं तुमसे कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो कि वे कटनी के लिए पक चुके हैं।"

(2) काटनेवाले।

काटनेवाले यीशु के चेले थे। यीशु ने स्पष्टरूप से कहा कि वह अपने चेलों को इसीलिए भेजता है ताकि वे उसके राज्य के लिए इन लोगों की फसल को काटें। यूहन्ना 4:38 में, यीशु कहता है, "मैंने तुम्हे वह खेत काटने के लिए भेजा है जिसके लिए तुमने परिश्रम नहीं किया। ओरों ने परिश्रम किया और तुम उनके परिश्रम के फल में भागी हुए"। यीशु और सामरी स्त्री दोनों सामरियों के बीच काम कर रहे थे। यीशु ने सामरी स्त्री के साथ सीधे तौर पर काम किया और उसने सीधे अपने नगरवालों के बीच में काम किया। अब प्रभु यीशु मसीह ने अपने चेलों को सामरियों के बीच नए विश्वासियों की फसल काटने के लिए भेजा था।

(3) एक बोता है, और दूसरा काटता है।

आत्मिक क्षेत्र में सामान्य बात यह है कि "एक व्यक्ति वहाँ काटता है जहाँ दूसरा व्यक्ति बोता है"। यूहन्ना 4:37 में, यीशु कहता है, "क्योंकि इस पर यह कहावत 'कि बोनेवाला और है और काटनेवाला और' ठीक बैठती है"। परमेश्वर के राज्य में प्रत्येक सेवक बोनेवाला और काटनेवाला दोनों होता है। वह दूसरों द्वारा बोई गयी फसल को काटता है और जो कुछ वह बोता है वह दूसरे काटते हैं। इसलिए, परमेश्वर की ईश्वरीय योजना में, हमेशा एक फसल होगी!

कुछ मसीही सेवक मुख्य रूप से सिर्फ बोते हैं। वह हर संभव तरीके से सुसमाचार का प्रचार करते हैं। अन्य मसीही सेवक मुख्य रूप से काटते हैं। वे लोगों की इस बात में सहायता करते हैं कि वे मसीह को अपने हृदय और जीवन में स्वीकार कर सकें। परमेश्वर की ईश्वरीय योजना में यह महत्वपूर्ण नहीं है कि कौन बोता है और कौन काटता है, क्योंकि हमेशा फसल रहेगी! और परमेश्वर के राज्य में मजदूर सदैव आनन्दित रह सकते हैं क्योंकि यहोवा में उनका परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता (1 कुरिन्थियों 15:58)! परमेश्वर का वचन कभी भी व्यर्थ ठहरकर उसके पास वापस नहीं लौटेगा परन्तु वह अपनी इच्छा को पूरी करेगा और जिस काम के लिए उसने उसे भेजा है उसे वह सफल करेगा (यशायाह 55:11)!

2. मसीह के चेलों की बढ़ोतरी (चेले बनाने के द्वारा)।

पढ़ें मत्ती 28:20; 1 कुरिन्थियों 3:-11; इफिसियों 4:11-16।

खोजें और चर्चा करें। चेलों की बढ़ोतरी कैसे होती है?

ध्यान दें। मसीही चेलों की संख्या चेले बनाने से बढ़ती है। यीशु मसीह में नए विश्वासियों की आत्मिक बढ़ोतरी तब होती है जब उन्हें मसीह की आज्ञा मानना सिखाया जाता है।

(1) सेवक और उसके सहयोगी-सेवक।

प्रेरित पौलुस सिखाता है कि परमेश्वर के राज्य में विभिन्न प्रकार के सेवक पाए जाते हैं : परमेश्वर कुछ सेवकों को सुसमाचार के बीज बोने के लिए, यानी सुसमाचार प्रचार करने के लिए चुनता है। और वह अन्य सेवकों को इन पौधों में पानी देने के लिए चुनता है, अर्थात, नए मसीहों की देखभाल करने के

लिए, यानी उन्हें चेले बनाने के लिए। लेकिन इन सभी अलग-अलग कार्यों में, केवल परमेश्वर ही है जो विभिन्न कार्यों को निर्देशित करता है और केवल वही है जो विश्वासियों को मसीह का चेला बनने में सहायता करता है! इसलिए, परमेश्वर सेवक है और मसीही केवल उसके सहयोगी हैं। परमेश्वर पुनर्जन्म के माध्यम से नया जीवन देता है। परमेश्वर नए विश्वासियों को पवित्र आत्मा के माध्यम से बढ़ने और अन्य मसीहियों को उनके अनुसरण करने का कारण बनाता है। और वह प्रत्येक मसीही सेवक को अलग-अलग कार्य सौंपता है।

(2) नींव की परतें और नींव पर निर्माण करने वाले।

यद्यपि ये मसीही परमेश्वर के सहयोगी हैं, लेकिन उनके पास सिर्फ एक ही कार्य नहीं है। कुछ सेवकों का कार्य नींव (जो यीशु मसीह है) रखना है। वे बोने और काटने के द्वारा सुसमाचार का प्रचार करते हैं। अन्य सेवकों को इस नींव पर निर्माण करने का कार्य सौंपा गया है। वे इन युवा मसीहियों को परिपक्व और कार्यरत मसीही बनाते हैं। वे इन नए मसीहियों की यीशु मसीह के साथ निरन्तर व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाए रखने, बाइबल के विषय में पूरा ज्ञान रखने और बाइबल की बातों की प्रतीति करने में मदद करते हैं, ताकि उनका स्वभाव और व्यवहार मसीह के समान बन सके और वे मसीह की सेवा कर सकें।

3. मसीह के लिए सेवकों की बढ़ोतरी (तैयार करने के द्वारा)।

पढ़ें इफिसियों 4:11-12

खोजें और चर्चा करें। मसीही सेवकों की बढ़ोतरी कैसे होती है?

ध्यान दें। सेवा के कार्यों के लिए मसीह के चेलों को तैयार करके मसीही सेवकों की संख्या में बढ़ोतरी की जाती है ताकि मसीह की देह को बनाया जा सके।

पौलुस सिखाता है कि यीशु मसीह ने कुछ मसीही सेवकों को विशेष आत्मिक वरदान और कार्य (प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं, प्रचारकों, चरवाहों और शिक्षकों के लिए) सौंपे हैं ताकि वे अन्य सभी मसीहियों को कलीसिया के कुछ स्थानों में सेवा के कार्यों के लिए तैयार करें और दुनिया भर में मसीही कलीसिया के निर्माण में हिस्सा बन सकें! वे कुछ मसीहियों को सुसमाचार प्रचार में और दूसरों को चेले बनाने में, या प्रचार, शिक्षण, पासबानी देखभाल इत्यादि के लिए या अन्यों मसीहियों को दूसरों को तैयार करने के लिए तैयार करते हैं। हर शहर में एक तैयार करने वाला होना चाहिए! परमेश्वर से पूछें कि क्या आपको भी ऐसा तैयार करने वाला बनना चाहिए!

प्रत्येक कलीसिया में कई अलग-अलग प्रकार की सेवाएँ होनी चाहिए। इन सेवाओं (सुसमाचार, चेला बनाने, और तैयार करने) के अलावा और भी बहुत सी सेवकाई हैं जैसे : बच्चों की सेवकाई, युवाओं, बीमारों, गरीबों, उत्पीड़ित लोगों की सेवकाई, प्रशासन में सेवकाई, मंत्रालयों को निर्देशित करने की सेवकाई, समाज और संसार में प्रभाव डालने की सेवकाई।

महत्वपूर्ण बात यह है कि प्राचीनों की ज़िम्मेदारी यह है वह इस बात पर ध्यान दें कि कलीसिया के सभी सदस्य मसीह के चेले बन जाएँ, यानी कि परिपक्व, कामकाजी और दृढ़ मसीही और कलीसिया (घर की कलीसिया), आस-पास (समाज) और दुनिया में सेवा के कार्य के लिए तैयार हों।

घ. चेले बनाने की सेवकाई का सारांश

1. चेले बनाने की सेवकाई मसीह के चेलों की संख्या और मसीह के लिए सेवकों की संख्या की बढ़ोतरी करती है।

सिखाएँ।

चेले बनाने की सेवकाई का सारांश

उन चेलों को बनाना है

जो बाद में स्वयं नए चेले बनायेंगे!

इसका अर्थ मसीही चेलों और मसीही सेवकों (चेले बनानेवालों)

दोनों को बढ़ाना (बढ़ोतरी करना) है!

यह निम्नलिखित की बढ़ोतरी करता है (वृद्धि):

- मसीह में नए विश्वासियों की संख्या की
- मसीह के नए चेलों की संख्या की
- मसीह के लिए नए सेवकों की संख्या (चेले बनानेवालों और तैयार करनेवालों)की
- और अन्त में मसीही कलीसिया (घर की कलिसिया) की संख्या की

बढ़ोतरी इतनी महत्वपूर्ण क्यों है? मत्ती 9:36-38 में लिखा है, "जब उस ने भीड़ को देखा तो उस को लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों की नाई जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे। तब उस ने अपने चेलों से कहा, 'पक्के खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं। इसलिये खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिये मजदूर भेज दे'।"

2. चेले बनाने की सेवकाई एक प्रवृति बन गई।

सिखाएँ। एक सेवकाई जो नये मसीही चेलों और नये मसीही सेवकों दोनों की बढ़ोतरी करता है, एक प्रवृति बन गई!

यह प्रवृति परिवारों, मित्रगणों, कलीसियाओं (घर की कलीसियाओं), कार्यस्थलों, और यहाँ तक कि अन्य शहरों, प्रान्तों, अन्य देशों, संस्कृतियों और विश्वासों में फैल जाएगी!

यीशु ने यह आज्ञा दी, "जाओ और सभी जातियों के लोगों को चेला बनाओ।" यीशु मसीह को इस कार्य को पूरा करने के लिए स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया गया है! यीशु मसीह दुनियाभर के देशों में आत्मिक बढ़ोतरी करने के लिए अपनी विश्वव्यापी कलीसिया को बुलाता है! और यीशु मसीह की करूणा और सामर्थ्य के द्वारा, वे इस कार्य को करेंगे!

बाइबल यह वादा नहीं करती है कि यह एक आसान विजय होगी। यीशु मसीह के समय से कई मसीहियों ने इस आत्मिक युद्ध में उत्पीड़न और यहाँ तक कि मृत्यु का भी सामना किया है। फिर भी, अंतिम विजय निश्चित है!

- यह रोमियों की पत्री का संदेश है। "हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी

बढ़कर हैं" (रोमियों 8:28-39)।
यह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का संदेश है। "ये (दुनिया के राजा अपने धार्मिक भविष्यद्वक्ताओं के साथ) मेम्ने से लड़ेंगे, और मेम्ना (यीशु मसीह) उन पर जय पाएगा, क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु, और राजाओं का राजा है (प्रकाशितवाक्य 17:14 है, तुलना करें प्रकाशितवाक्य 19:11-21)!

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *[प्रतिक्रिया]* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें)।
1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. "मसीहियों और कलीसियाओ में बढ़ोतरी" पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं। हर एक मसीही को शिष्य निर्माणकारी प्रक्रिया का एक हिस्सा सेवकाई में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें, जिससे विश्वासियों की संख्या, शिष्यों की संख्या और कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ती है।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **तीतुस 1-3** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. याद करें। नयी पांच आयतों को याद करें व दोहराएं। **(12) यूहन्ना 12:32।** रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
5. बाइबल अध्ययन। **यूहन्ना 14** के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है(भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।